# कबीर के विचार : एक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

**(डॉ अरुणा त्रिपाठी, असिस्टेंट प्रोफेसर, दिल्ली विश्वविद्यालय)**

दर्शन तथा विज्ञान का आपसी संबंध क्या है यह हमेशा से एक गंभीर चिंतन का विषय रहा है। यह द्वंद्व मूलतः दोनों की प्रकृति व कार्य पद्धति में उपस्थित कुछ मूलभूत अंतरों के कारण दिखाई देता है। जहां दर्शन का आरंभ ही आत्मा, परमात्मा, जगत–उत्पत्ति, माया आदि पारभौतिक विषय वस्तुओं के चिंतन से शुरू होता है तो वहीं विज्ञान प्रत्यक्ष जगत को अपना कर्मक्षेत्र मानता है। दार्शनिक प्रायः लौकिक जगत को गौण मानते हुए, अलौकिक के विवेचन का दम भरता नजर आता है, तो वहीं वैज्ञानिक उसे ही सत्य मानता है जो ज्ञानेंद्रिय द्वारा अनुभव किया जा सकता है और तर्क व तथ्य से सिद्ध किया जा सके।

यदि हम सूक्ष्म रूप से अवलोकन करें तो यह निष्कर्ष निकलता दिखाई देता है कि मूलतः दोनों का ध्येय जीव कल्याण ही है। बस प्राप्ति के साधन भिन्न हैं– जहां दर्शन इस ध्येय की प्राप्ति विशिष्ट (सूक्ष्म) से सामान्य (स्थूल) की यात्रा में करना चाहता है, तो वहीं विज्ञान इसे स्थूल से सूक्ष्म की ओर की यात्रा द्वारा। दोनों के मध्य सामंजस्य का एक अन्य स्तर दोनों की शोध विधियों में भी देखा जा सकता है। अनुभवमूलक ज्ञान को महत्व देते हुए सदैव स्थापित निष्कर्षों की पूर्ण तिलांजलि देने के साहस से युक्त, दोनों क्षेत्र सामंजस्य को प्रदर्शित करते हैं।

भारतीय आध्यात्मिक– दार्शनिक चिंतन की समादृत परंपरा में कई ऐसे संत हुए हैं जिनका दर्शन वैज्ञानिकता की कसौटी पर खरा उतरता है। उन्हीं संतों की परंपरा में से एक व्यक्तित्व ऐसा भी है जिसने अपने अनुभवजन्य दर्शन की ऐसी प्रस्तुति दी जो वैज्ञानिकता का सटीकता से वहन करती है। उस परमपुरुष का नाम है– कबीर।

कबीर तर्क, सिद्धांत और प्रत्यक्षवाद के धारक हैं और कमोवेश यही वैज्ञानिकता की कसौटियां हैं। इसलिए उनके दर्शन की वैज्ञानिकता पर बात करना अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। सभी बातों को एक किनारे रख दें और यदि एक मूलभूत तथ्य पर गौर करें कि क्या कबीर ने स्वयं को कभी दार्शनिक कहा? तो बहुत स्पष्ट जवाब है कि नहीं! उन्होंने तो सीधी सपाटबयानी में खुलेआम घोषणा कि– ***"मसि कागद छुओ नहीं, कलम गहि नहिं हाथ।"***

**माइकल फैराडे** सरीखे महान वैज्ञानिक जिन्होंने कभी कोई शिक्षा ग्रहण नहीं की फिर भी एक महान वैज्ञानिक हुए, उन्होंने कभी भी स्वयं को वैज्ञानिक नहीं कहा, वे सदैव अपना परिचय विज्ञान के विद्यार्थी के रूप में देते थे। कबीर भी इसी अहंशून्य वैज्ञानिक चेतना से संपृक्त व्यक्तित्व के धनी थे। ध्यान देने वाली बात है कि सामान्यतः एक मनुष्य को अपनी मौलिकता से बड़ा प्रेम होता है; एक मूर्तिकार अपनी सुंदर मूर्ति के प्रति, तो एक साहित्यकार अपनी रचना के प्रति स्वाभाविक रूप से आसक्त हो जाता है। आप किसी से उसकी मौलिकता छीनकर देखें वह आक्रामक हो जाएगा। शास्त्रों में बताया गया है कि मौलिकता से आसक्ति जन्मती है और आसक्ति से अहंकार का जन्म होता है। परंतु जब एक मनुष्य आत्मनिवेदन के चरम स्तर पर पहुंच जाता है तो वह अहंशून्य की उस सिद्धावस्था को प्राप्त कर लेता है जहाँ उसकी मौलिकता उसके श्रेष्ठ ध्येय हेतु समर्पित हो जाती है। कबीर इसी दार्शनिक वैज्ञानिक परंपरा के वाहक रहे हैं।

विज्ञान का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत है– अनुभव को सत्य मानना और अभिज्ञता का सम्मान करना। अर्थात अनुभव से अनुस्यूत ज्ञान का वरण करना और इस ज्ञान की सापेक्षता को स्वीकार करना। एक वाक्य में कहें तो अंग्रेजी की एक प्रसिद्ध उक्ति है– ***'Ignorance is bliss'*** विज्ञान का यही ध्येय वाक्य है। जब हम कबीर की ओर देखते हैं तो उनका पूरा जीवन ही सशक्त नकार की भावना से ओतप्रोत नजर आता है। उन्होंने कभी किसी एक मत को निरपेक्षतः सत्य नहीं माना है, तमाम पद्धतियों को जाना–समझा और जो

विवेकसम्मत लगा उसे अपनाया और जो इस पर खरा नहीं उतरा उसे झाड़ फटकारकर ध्वस्त कर दिया। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, कबीर के इसी व्यक्तित्व के संदर्भ में अपनी पुस्तक 'कबीर' में लिखते हैं। "मस्ती फक्कड़ाना स्वभाव और सब कुछ झाड़ फटकारकर चल देने वाले तेज ने कबीर को हिंदी साहित्य का अद्वितीय व्यक्ति बना दिया है।" चिंतन और मनन का विषय यह है कि क्या यह विरोध शाश्वत प्रकृति का है, क्या विज्ञान और दर्शन के बीच में सामंजस्य स्थापित कर पाना नितांत असंभव कार्य है?

अब कबीर के मूल दर्शन की ओर रुख करते हैं और इसकी वैज्ञानिकता की पड़ताल करते हैं। कबीर नाथ संप्रदाय में दीक्षित थे जिस कारण उनका दर्शन संबंधी दृष्टिकोण प्रारंभिक रूप से अद्वैत वेदांत से प्रभावित था, इसी के प्रभावाधीन कबीर चेतना, जगत, समय और शरीर के संबंध में अपने विचार रखते हैं। कबीर जगत को निस्सार और भ्रामक मानते हैं। उनके अनुसार संसार का अस्तित्व मात्र हमारे अनुभव के अधीन है। यह कोई शाश्वत सत्ता नहीं है, अपितु माया के प्रभावाधीन अस्तित्वमान है। वे कहते हैं–

***"यह संसार कागद की पुड़िया, बूंद पड़े भूल जाना है।"***

ध्यातव्य है कि आधुनिक *क्वांटम भौतिकी* भी ब्रह्मांड के अस्तित्व को लेकर कुछ ऐसे ही निष्कर्ष का संकेत दे रही है। 20वीं सदी में उस समय भूचाल आ गया जब **यंग** ने डबल स्लिट प्रयोग किया और सिद्ध किया कि प्रकाश एक तरंग है और **आइंस्टीन** ने अपने प्रकाश विद्युत प्रभाव द्वारा प्रकाश की कण प्रकृति को उजागर किया। कालांतर में 1923 में **डी ब्रोगली** ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रकाश की भांति हर पदार्थ कण व तरंग प्रकृति धारण करता है जो सिर्फ आपके प्रक्षेपण पर निर्भर करता है, अर्थात संसार सिर्फ कंपमान तरंग है जो आपके विचारों के कारण अस्तित्व में आता है। 2022 में भौतिकी का नोबेल प्राइज पाने वाले **एलन एस्पेक्ट, जॉन क्लॉजर और एंटोन** ने भी ब्रह्मांड की उत्पत्ति की ऐसी ही व्याख्या दी।

चेतना के संदर्भ में बात करें तो कबीर चेतना की द्वैत सत्ता को नहीं मानते हैं। वे आत्म चेतना को परम चेतना का ही अंश मानते हैं,-

**"जल में कुंभ, कुंभ में जल है, बाहर भीतर पानी। फूटा कुंभ जल जलहिं समाना इहै तथ कहे गियानी।"**

**श्रोडिंगर** अपनी पुस्तक 'व्हाट इस लाइफ' में इस तथ्य की ओर इशारा करते हुए कहते हैं– "चेतना को बहुलता में कभी अनुभव नहीं किया जा सकता, उसे मात्र एकल स्वरूप में ही अनुभव किया जा सकता है।" इसी प्रकार **मैक्स प्लांक** ने तो यहां तक माना है कि चेतना मूलभूत तत्व है और पदार्थ उसके उपोत्पाद। कबीर के चेतना संबंधी ये विचार ***क्वांटम भौतिकी के क्वांटम इंटेंगलमेंट*** जैसे सिद्धांतों द्वारा भी सत्य प्रतीत होते हैं। सरल शब्दों में ब्रह्मांड में स्थित दो पदार्थ कण जो विपरीत प्रकृति के हैं, आपस में एक दूसरे से सम्बद्ध होते हैं, फिर चाहे वे एक दूसरे से कितनी ही दूरी पर क्यों ना हों?

निस्संदेह कबीर का अद्वैतवाद से प्रभावित दर्शन आधुनिक वैज्ञानिक प्रतिमानों से कहीं ना कहीं सम्बद्ध नजर आता है। कबीर का भक्त स्वरूप कोई उधार की वस्तु नहीं थी, अपितु तर्क अनुभव और संदेह से अनुप्रमाणित वैज्ञानिक प्रविधि थी। कबीर की दार्शनिक मान्यताओं पर अभी शोध और विचार की काफी संभावनाएं हैं। चेतना, आत्मा, जगत जैसे विषय, विज्ञान के विषय बनते जा रहे हैं। अतः अब आवश्यकता है कि हम कबीर को महान संत और भक्त समझने के साथ–साथ वैज्ञानिक विमर्शों में भी समाहित करने का एक नया प्रयास करें।

भूविज्ञान और पर्यावरण विज्ञान के अनुसार प्रकृति में अनेक तरह के चक्र चलाते हैं– जीवन चक्र, भौगोलिक चक्र, भूरासायनिक चक्र, खाद्य चक्र। हर एक चक्र का सार यही है– कि हर उत्पत्ति एक समाप्ति की

ओर जाती है; हर निर्माण, एक प्रलय की ओर जाता है। ***'बिग बैंग थ्योरी'*** की संकल्पना भी इसी बात को परिपुष्ट करती है। कबीर ने भी इसी नश्वरता पर अपनी अभिव्यक्ति दी है,

**जो उग्या सो अन्तबै, फूल्या सो कुमलाहीं। जो चिनिया सो ढही पड़े, जो आया सो जाहीं।।**

यद्यपि साहित्यकारों ने इसे जीवन की नश्वरता के संबंध में रेखांकित किया है पर इसके साथ–साथ इस दोहे की दोनों पंक्तियां वैज्ञानिक चिंतन से परिपुष्ट दिखाई देती हैं। मनुष्य, जीव–जंतु या पेड़–पौधों का जीवन हो, वह एक निश्चित समयकाल के लिए है जो दूसरी पंक्ति से स्पष्ट है, लेकिन यहाँ पहली पंक्ति वैज्ञानिक चिंतन में गंभीर अर्थ धारण करती है।

20वीं सदी ने आधुनिक ब्रह्मांड विज्ञान के ज़रिए ब्रह्मांड की शुरुआत के बारे में हमारी सोच में बदलाव ला दिया। 1920 के दशक में, ***एडविन हबल की 'विस्तारित ब्रह्मांड'*** की अभूतपूर्व खोज ने बिग बैंग सिद्धांत के विकास की नींव रखी, जिसने ब्रह्मांडीय विकास के बारे में हमारी समझ को नया आकार दिया।

बिग बैंग थ्योरी से पता चलता है कि लगभग 13.8 अरब साल पहले पूरा ब्रह्मांड की शुरुआत एक घने, बेहद गर्म एकल स्थान से हुई थी। ब्रह्मांड की शुरुआत के लिए बिग बैंग थ्योरी के पुख्ता तौर पर स्थापित होने के बाद, शोधकर्ताओं ने अनुमान लगाया कि गुरुत्वाकर्षण बल समय के साथ ब्रह्मांड के विस्तार को धीमा कर देगा, गुरुत्वाकर्षण अंततः विस्तार को रोक देगा। फिर, एक प्रतिक्षेप होगा और सब कुछ धीरे–धीरे एक साथ वापस आ जाएगा, शायद एक बिंदु पर वापस। शोधकर्ताओं ने इस सिद्धांत को **बिग क्रंच** नाम दिया। इसी प्रकार **बिग फ्रीज थ्योरी** के अनुसार जैसे–जैसे आकाशगंगाएँ अलग होती जाएँगी और ब्रह्मांड ठंडा और बंजर होता जाएगा, और अंततः ब्रह्मांड एक ठंडा, अंधकारमय शून्य बन जाएगा। वहाँ कोई जीवन, प्रकाश या कोई पहचानने योग्य संरचना या गतिविधि नहीं होगी।

ब्रह्मांड की दोलन संकल्पना अर्थात उत्पत्ति–विनाश से संबंधित यही भाव कबीर के **'जो उग्या सो आथवे'** में परिलक्षित होता है। साहित्यकारों का यह तर्क की यह दोहा गीता–दर्शन के जन्म मृत्यु अनिवार्यता से प्रभावित है, सत्य हो सकता है पर यह प्रभाव अनिवार्यतः सत्य नहीं। क्योंकि कबीर ने स्वयं इस दोहे की व्याख्या नहीं की है। उन्होंने इस दोहे की रचना किस संदर्भ में की यह सिर्फ अनुमान का विषय है और उन अनुमान में एक प्रायिकता वैज्ञानिक चिंतन की भी हो सकती है।

इस समग्र विश्लेषण का लब्बोलुआब यह है कि केवल कबीर का काव्य, ना केवल वैज्ञानिक चिंतन या वैज्ञानिक सिद्धांतों से परिपूर्ण है अपितु कबीर के अंतर्मन का आधार भी वैज्ञानिक है। कबीर विज्ञान के विद्यार्थी नहीं थे, हो सकता है विज्ञान की गहराइयों से परिचित भी ना रहे हों, पर उनकी वाणी का आधार वैज्ञानिक तर्क, चिंतन, प्रमाण और पुष्टि है। उनकी एक ही पंक्ति में उनको वैज्ञानिक चिंतन के दृष्टिकोण वाले कवियों में सर्वश्रेष्ठ और सबसे आगे खड़ा करता है–

**"झूठै झूठ रह्यो उरझाई, साँचा अलख जग लखा न जाई।"**

वैज्ञानिकता का सार यही है कि संसार में जो भी कुछ खोज, विश्लेषण व तर्क का विषय है, वही सच है और कबीर अपनी वाणी के द्वारा यही बताते रहे हैं।

**संदर्भ :**


1. 'Non-duality of Vedanta and Quantum Mechanics' by Dr. G.Srinivasa Rao and Dr. Panem Charanarur In International Journal of Research Publication and Reviews, www.ijrpr.com, 2022, ISSN 2582-7421
2. https://www.apu.apus.edu/area-of-study/math-and-science/resources/origin-of-the-universe/
3. दास श्यामसुंदर, 'कबीर ग्रंथावली' (2018), लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. शर्मा रामकिशोर. 'कबीर ग्रंथावली-सटीक' (2018) लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. कबीर के दार्शनिक विचारों का विश्रेषणात्मक अध्ययन, प्रमिला, IJCRT, Volume 10, Issue: 8 August 2022, ISSN: 2320-2882
6. www.vedantandscience.com Quantum Physics and Vedanta, Jayant Kapatker, November 2014
7. द्विवेदी हजारी प्रसाद, 'कबीर' (1942), हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, मुंबई
8. Schrodinger Erwin, 'What is Life? and Mind and Matter' (1967), Cambridge University Press, New York
9. चोपड़ा सुदर्शन, 'कबीर परिचय तथा रचनाएं' (2003), हिन्दी पॉकेट बुक्स प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली